

# **NCERT SOLUTIONS**

**CLASS - 12th**



*aglasem.com*

Class : 12th

Subject : Psychology

Chapter : 5

Chapter Name : चिकित्सा उपागम

Q1 मनश्चिकित्सा की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र का वर्णन कीजिए। मनश्चिकित्सात्मक संबंध के महत्व को उजागर कीजिए।

Answer. मनश्चिकित्सा का उद्देश्य दुर्नुकूल व्यवहारों को बदलना, व्यक्ति कष्ट की भावना को कम करना तथा रोगी को अपने पर्यावरण से बेहतर ढंग से अनुकूल करने में मदद करना है। अपर्याप्त व्यवहारिक, व्यवसायिक तथा सामाजिक समायोजन की यह आवश्यकता होती है कि व्यक्ति के व्यक्तिक पर्यावरण में परिवर्तन किया जाए। सभी मनश्चिकित्सात्मक उपागमों में निम्न अभिलक्षण पाए जाते हैं- पहला की चिकित्सा के विभिन्न सिद्धांतों में अंतर्निहित नियमों का व्यवस्थित या क्रमबद्ध अनुप्रयोग होता है, दूसरा, केवल वे व्यक्ति जिन्हें कुशल पर्यवेक्षण में व्यवहारिक प्रशिक्षण प्राप्त किया हो, मनश्चिकित्सा कर सकते हैं, हर कोई नहीं। एक प्रशिक्षित व्यक्ति अनजाने में लाभ के बजाए हानि अधिक पहुंचा सकता है। तीसरा की चिकित्सात्मक स्थितियों में एक चिकित्सक और एक सेवार्थी होता है जो अपनी संवेगात्मक समस्याओं के लिए सहायता चाहता है और प्राप्त करता है तथा चौथा, इन दोनों व्यक्तियों, चिकित्सक और सेवार्थी के बीच की अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप एक चिकित्सात्मक संबंध का निर्माण एवं उसका सुदृढीकरण होता है। यह एक गोपनीय, अंतर्व्यक्तिक एवं गत्यात्मक संबंध होता है। यह मानवीय संबंध किसी भी मनोवैज्ञानिक चिकित्सा का केंद्र होता है तथा यही परिवर्तन का माध्यम बनता है।

सेवार्थी एवं चिकित्सक के बीच एक विशेष संबंध को चिकित्सात्मक संबंध या चिकित्सात्मक मैत्री कहा जाता है। यह ना तो एक क्षणिक परिचय होता है ना ही एक स्थाई एवं टिकाऊ संबंध। चिकित्सात्मक मैत्री के दो मुख्य घटक होते हैं। पहला घटक इस संबंध की संविदात्मक प्रकृति है, जिसमें दो इच्छुक व्यक्ति, सेवार्थी एवं चिकित्सक, एक ऐसी साझेदारी या भागीदारी में प्रवेश करते हैं जिसका उद्देश्य सेवार्थी की समस्याओं का निराकरण में उसकी मदद करना होता है। चिकित्सात्मक मैत्री का दूसरा घटक है- चिकित्सा की सीमित अवधि। यह मैत्री तब तक चलती है जब तक सेवार्थी अपनी समस्याओं का सामना करने में समर्थ न हो जाए तथा अपने जीवन का नियंत्रण अपने हाथ में न ले ले। इससे संबंध की कई अनूठी विशेषताएं हैं। यह एक विश्वास तथा भरोसे पर आधारित संबंध है। उच्चस्तरीय विश्वास सेवार्थी को चिकित्सक के सामने अपना बोझ हल्का करने तथा उसके सामने अपनी मनोवैज्ञानिक और व्यक्तिगत समस्याओं को विश्वस्त रूप से बतलाने में समर्थ बनाता है।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q2 मनोचिकित्सा के विभिन्न प्रकार कौन से हैं? किस आधार पर इनका वर्गीकरण किया गया है?

Answer. मनोचिकित्सा को तीन व्यापक समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे कि मनोगतिक, व्यवहार तथा अस्तित्वपरक मनोचिकित्साएं। कालानुक्रम रूप में मनोगतिक चिकित्सा का आविर्भाव पहले हुआ, तत्पश्चात व्यवहार चिकित्सा जबकि अस्तित्वपरक चिकित्साओं जिन्हें तीसरी शक्ति भी कहा जाता है का आविर्भाव सबसे अंत में हुआ।

मनोगतिक चिकित्सा के अनुसार अंतःमनोद्वन्द, अर्थात् व्यक्ति के मानस में विद्यमान द्वन्द, मनोवैज्ञानिक समस्याओं का स्रोत होते हैं। व्यवहार चिकित्सा के अनुसार मनोवैज्ञानिक समस्याएं व्यवहार एवं संज्ञान के दोषपूर्ण अधिगम के कारण उत्पन्न होती हैं। अस्तित्वपरक चिकित्सा की अवधारणा है कि अपने जीवन और अस्तित्व के अर्थ से संबंधित प्रश्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं का कारण होते हैं।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q3 एक चिकित्सक सेवार्थी से अपने सभी विचार यहां तक कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के अनुभवों को बताने को कहता है। इसमें उपयोग की गई तकनीक और चिकित्सा के प्रकार का वर्णन कीजिए।

Answer. मनोगतिक चिकित्सा में बाल्यावस्था की अतृप्ति इच्छाएं तथा बाल्यावस्था के अनसुलझे भय अंतर्मनोद्वंद को उत्पन्न करते हैं। मनोगतिक चिकित्सा मुक्त साहचर्य विधि और स्वप्न को बताने की विधि का उपयोग सेवार्थी की भावनाओं और विचारों को प्राप्त करने के लिए करती है। इस सामग्री की व्याख्या सेवार्थी के समक्ष की जाती है ताकी इसकी मदद से वह अपने द्वंद्वों का सामना और समाधान कर अपनी समस्याओं पर विजय पा सके। मनोगतिक चिकित्सा संवेगात्मक अंतर्दृष्टि को महत्वपूर्ण लाभ मानती है जो सेवार्थी उपचार बीके द्वारा प्राप्त करता है। संवेगात्मक अंतर्दृष्टि तब उपस्थित मानी जाती है जब सेवार्थी अपने द्वन्द्वों को बौद्धिक रूप से समझता है। द्वंद्वों को संवेगात्मक रूप से स्वीकार करने में समर्थ होता है और द्वंद्वों की ओर अपने संवेगों को परिवर्तित करने में समर्थ होता है।

मनोगतिक उपागम अंतःमनोद्वन्द को मनोवैज्ञानिक विकारों का मुख्य कारण समझता है अतः उपचार में पहला चरण इसी अंतर्द्वंद को बाहर निकालना है। मनोविश्लेषण ने अन्तःमनोद्वंद को बाहर निकालने के लिए दो महत्वपूर्ण विधियों, मुक्तसाहचर्य विधि तथा स्वप्न व्याख्या विधि का आविष्कार किया। मुक्त साहचर्य विधि में, चिकित्सात्मक संबंध स्थापित हो जाने के बाद, सेवा थी आरामदेह महसूस करता है। तब चिकित्सक उसे लेट जाने को कहता है और अपनी आंखों को बंद करने के बाद बिना किसी काट छांटकर अपने मन में आ रहे विचारों को बताने को कहता है। इसी विधि को मुक्त साहचर्य विधि कहते हैं। चूकी चिकित्सक बीच में हस्तक्षेप नहीं करता इसलिए विचारों का मुक्त प्रवाह, अचेतन मन की इच्छाएं और द्वंद्व जो अहं द्वारा दमित किए जाते रहे हो वह सचेतन मन में प्रकट होने लगते हैं। सेवार्थी का यही मुक्त साहचर्य वाला शाब्दिक वृत्तांत सेवार्थी के अचेतन मन की खिड़की है जिसमें अभिगमन का चिकित्सक को अवसर मिलता है। इस तकनीक के साथ ही साथ सेवार्थी को निद्रा से जागने के बाद, अपने स्वप्नों को लिखने को कहा जाता है। मनोविश्लेषक इन स्वप्नों को मन में उपस्थित अतृप्त इच्छाओं के प्रतीक के रूप में देखता है। स्वप्न की प्रतिमाएं प्रतीक हैं जो अंतःमानसिक शक्तियों का संकेतक होती हैं। इन प्रतीकों की व्याख्या अनुवाद की एक स्वीकृत परंपरा के अनुसार की जाती है जो अतृप्त इच्छाओं तथा द्वंद्वों के संकेतक होते हैं।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q4 व्यवहार चिकित्सा में प्रयुक्त विभिन्न तकनीकों की चर्चा कीजिए।

Answer. व्यवहार चिकित्सा का मानना है कि मनोवैज्ञानिक कष्ट दोषपूर्ण व्यापार प्रतिरूपों या विचार प्रतिरूपों के कारण उत्पन्न होते हैं। अतः इनका केंद्र बिंदु सेवार्थी में विद्यमान व्यवहार और विचार होते हैं। उसका अतीत केवल उसके दोषपूर्ण व्यवहार तथा विचार प्रति रूपों की उत्पत्ति को समझने के संदर्भ में महत्वपूर्ण होता है। अतीत को फिर से सक्रिय नहीं किया जाता। वर्तमान में केवल दोषपूर्ण प्रतिरूपों में सुधार किया जाता है।

व्यवहार को परिवर्तित करने की बहुत सी तकनीके उपलब्ध हैं। इन तकनीकों का सिद्धांत है सेवार्थी के भाव-प्रबोधन स्तर को कम करना, प्राचीन अनुबंधन या क्रियाप्रसूत अनुबंधन द्वारा व्यवहार को बदलना जिसमें प्रबलन की भिन्न भिन्न प्रासंगिकता हो, साथ ही यदि आवश्यकता हो तो प्रतिस्थानिक अधिगम प्रक्रिया का भी उपयोग करना।

व्यवहार परिष्करण की दो मुख्य तकनीकें हैं- निषेधात्मक प्रबलन और विमुखी अनुबंधन। प्राणियों की ऐसी अनुक्रियाएं जो उन्हें पीड़ादायक उद्दीपकों से छुटकारा दिलाती हैं या उन से दूर रहने और बच निकलने के पथ प्रदर्शन करती हैं, निषेधात्मक प्रबलन प्रदान करती हैं। उदाहरण के लिए, कपड़े पहनना, लकड़ी जलाना, तथा बिजली के हीटर का उपयोग करना सिखाता है। वहीं, विमुखी अनुबंधन का संबंध अवांछित अनुक्रिया के विमुखी परिणाम के साथ पुनरावृत्त साहचर्य से है। उदाहरण के लिए, एक मद्यव्यसनि को बिजली का एक हल्का आघात दिया जाए और मद्य संधने को कहा जाए। ऐसे बार बार करने से शराब को गंध से उसे घृणा हो जाएगी और उसके साथ बिजली के झटके का साहचर्य जुड़ जाएगा और वो शराब छोड़ देगा।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q5 उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए कि संज्ञानात्मक विकृति किस प्रकार घटित होती है?

Answer. संज्ञानात्मक चिकित्सा आरन बेक की है। दुश्चिंता या अवसाद द्वारा अभिलक्षित मनोवैज्ञानिक कष्ट संबंधी उनके सिद्धांत के अनुसार परिवार और समाज द्वारा दिए गए बाल्यावस्था में दिए गए अनुभव मूल अन्विति योजना या तंत्र के रूप में विकसित हो जाते हैं। जिनमें व्यक्ति के विश्वास और क्रिया के प्रतिरूप सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार एक सेवार्थी जो बाल्यावस्था में अपने माता पिता द्वारा उपेक्षित था एक ऐसा मूल स्कीमा विकसित कर लेता है, " मैं वांछित हूँ"। जीवन काल के दौरान कोई निर्णायक घटना उसके जीवन में घटित होती है। विद्यालय में सबके सामने अध्यापक के द्वारा हंसी उड़ाई जाती है। यह निर्णायक घटना उसके मूल स्कीमा, मैं वांछित हूँ, को क्रियाशील कर देती है जो नकारात्मक स्वचालित विचारों को विकसित करती है। नकारात्मक विचार सतत अविवेक की विचार होते हैं, जैसे- मुझसे कोई प्यार नहीं करता, मैं बुरा हूँ, मैं मूर्ख हूँ। इन नकारात्मक स्वचालित विचारों में संज्ञानात्मक विकृतियाँ आने लगती हैं। संज्ञानात्मक विकृतियाँ चिंतन के ऐसे तरीके हैं जो सामान्य प्रकृति के होते हैं किंतु वह वास्तविकता को नकारात्मक तरीके से विकृत करते हैं।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q6 कौन-सी चिकित्सा सेवार्थी को व्यक्तिगत संवृद्धि चाहने एवं अपनी सम्भाव्यताओं की सिद्धि के लिए प्रेरित करती है? उन चिकित्साओं की चर्चा कीजिये जो इस सिद्धांत पर आधारित हैं।

Answer. मानवतावादी-अस्तित्वपरक चिकित्सा की धारणा है कि मनोवैज्ञानिक कष्ट व्यक्ति के अकेलेपन, विसम्बन्धन तथा जीवन का अर्थ समझने और यथार्थ संतुष्टि प्राप्त करने में अयोग्यता की भावनाओं के कारण उत्पन्न होते हैं। मनुष्य व्यक्तिगत संवृद्धि एवं आत्मसिद्धि की इच्छा तथा संवेगात्मक रूप से विकसित होने की सहज आवयश्कता से प्रेरित होते हैं। जब समाज और परिवार के द्वारा ये आवश्यकताएँ बाधित की जाती हैं तो मनुष्य मनोवैज्ञानिक कष्ट का अनुभव करता है। आत्मसिद्धि को सहज शक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्ति को जटिल, संतुलित और समाकलित होने के लिए अर्थात् बिना खंडित हुए जटिलता एवं संतुलन प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। जब सेवार्थी अपने जीवन में आत्मसिद्धि की बाधाओं का प्रत्यक्षण कर उनको दूर करने योग्य हो जाता है रोगोपचार घटित होता है। आत्मसिद्धि के लिए आवश्यक है संवेगों की मुक्त अभिव्यक्ति। इसमें मूल पूर्व धारणा यह है कि सेवार्थी को अपने व्यवहारों का नियंत्रण करने की स्वतंत्रता है तथा यह उसका ही उत्तरदायित्व है। चिकित्सक केवल एक सुगमकर्ता और मार्गदर्शक होता है। चिकित्सा की सफलता के लिए सेवार्थी स्वयं उत्तरदायी होता है। चिकित्सा का मुख्य उद्देश्य सेवार्थी की जागरूकता को बढ़ाना है। जैसे-जैसे सेवार्थी अपनी व्यक्तिगत अनुभवों को समझने लगता है वह स्वस्थ होने लगता है। सेवार्थी आत्मसंवृद्धि की प्रक्रिया को प्रारंभ करता है।

इसके कुछ निम्नलिखित सिद्धांत हैं-

1) अस्तित्वपरक चिकित्सा- व्यक्ति के अस्तित्व के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक या आध्यात्मिक पक्षों से जीवन की समस्याएं जोड़ती हैं तो तंत्रिकातापी दुश्चिंता उत्पन्न होती है। फ्रैंकल ने निरर्थकता की भावना को उत्पन्न करने में आध्यात्मिक दुश्चिंता की भूमिका पर जोर दिया है और इसलिए इसे अस्तित्व दुश्चिंता कहा जा सकता है।

2) सेवार्थी केंद्रित चिकित्सा- सेवार्थी केंद्रित चिकित्सा कार्ल रोजर्स द्वारा प्रतिपादित की गई है। रोजर्स ने वैज्ञानिक निग्रह को सेवार्थी केंद्र चिकित्सा की व्यष्टिकृत पद्धति से संयुक्त किया। रोजर्स ने मनःचिकित्सा में स्व के संप्रत्यय को प्रस्तुत किया और उनकी चिकित्सा का मानना है कि किसी व्यक्ति के अस्तित्व का मूल स्वतंत्रता और वरण होते हैं। चिकित्सा एक ऐसा गर्मजोशी का संबंध प्रदान करती है जिससे सेवार्थी अपनी विघटित भावनाओं के साथ संबद्ध हो सकता है।

3) गेस्टाल्ट चिकित्सा- जर्मन शब्द गेस्टाल्ट का अर्थ है समग्र। फ्रेडरिक पर्स ने अपनी पत्नी लॉरा पर्स के साथ प्रस्तुत की थी। गेस्टाल्ट चिकित्सा का उद्देश्य व्यक्ति की आत्मा जागरूकता एवं स्वीकृति के स्तर को बढ़ाना होता है। सेवार्थी को शारीरिक प्रक्रियाओं और संवेगों, जो जागरूकता को अवरुद्ध करते हैं, को पहचाना सिखाया जाता है। चिकित्सक इसके लिए सेवार्थी को अपनी भावनाओं और द्वंदों के बारे में उसकी कल्पनाओं की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q7 मनोचिकित्सा में स्वास्थ्य लाभ के लिए किन कारकों का योगदान होता है कुछ वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों की गणना कीजिए।

Answer. मनःचिकित्सा मानसिक कष्टों के उपचार हेतु है। ऐसे कई हैं जो स्वास्थ्य लाभ में योगदान करते हैं, वह इस प्रकार हैं:

1) स्वास्थ्य लाभ में एक महत्वपूर्ण कारक है चिकित्सक द्वारा अपनाई गई तकनीक तथा रोगी के साथ इन्हीं तकनीकों का परिपालन। जैसे दुश्चिंता सेवार्थी को स्वस्थ करने के लिए व्यवहार पद्धति और संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा शाखा अपनाई जाती है।

2) चिकित्सात्मक मैत्री जो चिकित्सक एवं रोगी के बीच में बनती है, में स्वास्थ्य लाभ के गुण विद्यमान होते हैं क्योंकि चिकित्सक नियमित रूप से सेवार्थी से मिलता है तथा उसे तदनुभूति और हार्दिकता प्रदान करता है।

3) चिकित्सा के प्रारंभिक सत्रों में सेवार्थी की समस्याओं की प्रकृति को समझने के लिए उसका साक्षात्कार किया जाता है, तो वह स्वयं द्वारा अनुभव किए जा रहे संवेगात्मक समस्याओं को चिकित्सक के सामने रखता है। संवेगों को बाहर निकालने की इस प्रक्रिया को भाव विरेचन कहते हैं। इसमें स्वास्थ्य लाभ के गुण विद्यमान होते हैं।

4) मनःचिकित्सा से संबंधित अनेक अवशिष्ट कारक हैं। इनमें से कुछ कारक सेवार्थी से संबंधित बताए जाते हैं तथा कुछ चिकित्सक से संबंधित। यह कारक अवशिष्ट इसलिए कहे जाते हैं क्योंकि यह मन चिकित्सा की विभिन्न पद्धतियों, भिन्न सेवार्थियों मनःचिकित्सकों के आर पार घटित होती है। सेवार्थी पर लागू होने वाले अवशिष्ट कारक हैं- परिवर्तन के लिए अभिप्रेरणा उपचार के कारण सुधार की प्रत्याशा इत्यादि। चिकित्सक पर लागू होने वाले अवशिष्ट कारक हैं- सकारात्मक स्वाभाव अनसुलझे संवेगात्मक द्वंदों की अनुपस्थिति, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की उपस्थिति इत्यादि।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q8 मानसिक रोगियों के पुनः स्थापन के लिए कौन सी तकनीकों का उपयोग किया जाता है?

Answer. मनोवैज्ञानिक विकारों के उपचार के दो घटक होते हैं, अर्थात् लक्षणों में कमी आना तथा क्रियाशीलता के स्तर में सुधार लाना। मनोविदलता जैसी गंभीर मानसिक विकारों के लक्षणों में कमी आना जीवन की गुणवत्ता में सुधार से संबंधित नहीं हो सकता है। कई रोगी नकारात्मक लक्षणों से ग्रसित होते हैं, जैसे- काम करने करने दूसरे लोगों के साथ में अनभिमुखता तथा अभिप्रेरणा का अभाव। इस तरह के रोगियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पुनः स्थापना की आवश्यकता होती है। पुनः स्थापना का उद्देश्य रोगी को सशक्त बनाना होता है। जिससे जितना संभव हो सके वह समाज का एक उत्पादक सदस्य बने। पुनः स्थापना में रोगियों को व्यवसायिक चिकित्सा, सामाजिक कौशल प्रशिक्षण तथा व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है। व्यवसायिक चिकित्सा में रोगियों को मोमबत्ती बनाना, कागज की बनाना और कपड़ा बुनना सिखाया जाता है जिससे वे एक कार्य अनुशासन बना सकें। भूमिका निर्वाह, अनुकरण और अनुदेश, के माध्यम से रोगियों को सामाजिक कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे कि वे अंतःव्यक्ति कौशल विकसित कर सकें। संज्ञानात्मक पुनः प्रशिक्षण मूल संज्ञानात्मक प्रकार्यों, जैसे- अवधान, स्मृति और अधिशासी प्रकार्यों में सुधार लाने के लिए दिया जाता है। जब रोगी में पर्याप्त सुधार आ जाता है तो उसे व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें उत्पादक रोजगार प्रारंभ करने के लिए आवश्यक कौशल के अर्जन में उसकी मदद की जाती है।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q9 छिपकली/ तिलचट्टा के दुर्भित्ती भय का सामाजिक अधिगम सिद्धांतकार किस प्रकार स्पष्टीकरण करेगा? इसी दुर्भित्ति का एक मनोविश्लेषक किस प्रकार स्पष्टीकरण करेगा?

Answer. छात्र स्वयं करें।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q10 क्या विद्युत-आक्षेपी चिकित्सा मानसिक विकारों के उपचार के लिए प्रयुक्त की जानी चाहिए?

Answer. विद्युत-आक्षेपी चिकित्सा जैव आयुर्विज्ञान चिकित्सा का एक दूसरा प्रकार है। इलेक्ट्रोड द्वारा बिजली के हल्के आघात रोगी के मस्तिष्क में दिए जाते हैं जिससे आक्षेप उत्पन्न हो सके। जब रोगी के सुधार के लिए बिजली के आघात आवश्यक समझे जाते हैं तो यह केवल मनोरोगविज्ञानी के द्वारा ही दिए जाते हैं। विद्युत-आक्षेपी चिकित्सा एक नेमी उपचार नहीं है और यह तभी दिया जाता है जब दवाएं रोगी के लक्षणों को नियंत्रित करने में प्रभाव नहीं होती। मुझे ऐसा लगता ही कि जब तक दवाओं से रोग को ठीक किया जा सकता है तब तक यह प्रयोग में नहीं लाना चाहिए। लेकिन जब रोग की दशा बिगड़ने लगे और विद्युत का प्रयोग करना आवश्यक हो जाये तो डॉक्टर के निगरानी में सीमित बिजली के झटके दिए जानने चाहिए और रोगी को ठीक करना चाहिए।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

Q11 किस प्रकार की समस्याओं के लिए संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा सबसे उपयुक्त मानी जाती है?

Answer. मनश्चिकित्सा की प्रभाविता एवं परिणाम पर किये गए अनुसंधान ने निर्णायक रूप से प्रमाणित किया है कि संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक विकारों जैसे- दुश्चिंता, अवसाद, आतंक दौरा,

सीमावर्ती व्यक्तित्व इत्यादि के लिए एक संक्षिप्त और प्रभावोत्पादक उपचार है। मनोविकृति की रूप रेखा बताने के लिए संज्ञानात्मक व्यवहार चिकित्सा जैव-मनोसामाजिक उपागम का उपयोग करती है। यह संज्ञानात्मक चिकित्सा को व्यावहारिक तकनीकों के साथ संयुक्त करती है।

Page : 16 , Block Name : समीक्षात्मक प्रश्न

aglasem.com